INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

छत्तीसगढ में धर्म, संस्कृति, दर्शन में कबीर के प्रभाव का अध्ययन

(Study of the influence of Kabir in the Philosophy of Religion and Culture in Chhattisgarh)

डॉ. प्रेमलता गौरे
प्राचार्य तथा शोध निदेशक
शासकीय महाविद्यालय,
बेरला (छत्तीसगढ, भारत)

हेमलाल सहारे
शोधार्थी
शासकीय दीग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, राजनांदगाव (छत्तीसगढ, भारत)
E-mail: hemlalsahare01@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/05.2022-19676157/IRJHIS2205018

सारांश :

मनुष्य का सॉस्कृतिक पक्ष उनके जीवन का महत्वपूर्ण भाग है। इसके बिना मानव जीवन को एक श्रेष्ठ सामाजिक जीवन की श्रेणी में रखना संभव नहीं है। समय–समय पर अनेक महान पुरूषों ने अपने विचारों से समाज को दिशा देकर संवर्धित करने का स्तुत्य कार्य किया है। प्रत्येक महापुरूषों,विदुषियों के अपने अलग वैचारिक मत रहे है। वे अपने विचारों को काव्य,साहित्य,उपदेशकों के रूप में जनमानस तक पहुॅचाने का कार्य किये हैं। जिससे एक सभ्य तथा आदर्श समाज का निर्माण व विकास हो सके। जहॉ सामाजिक कुरीतियों,बाहय आडम्बरों से दूर समतामूलक सद्भाव की भावना भरी हो। उनकी इन बातों का समयानुरूप समाज की ग्रहणशीलता के अनुक्रम में धर्म,संस्कृति,दर्शन,लोककला,जीवनशैली को प्रभावित करता रहा है।

बीज शब्द : *धर्म, संस्कृति, दर्शन, लोककला, जीवनशैली, विचार, समाज आदि।*

प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकालीन युग में ज्ञानाश्रयी शाखा के निर्गुण भक्त कवियों मे कबीर का स्थान सर्वोच्च है। महात्माओं का जन्म विशेष कार्य प्रयोजन के लिये होता है। कबीर का जन्म भी उस समय की महत्वपूर्ण घटना है। कबीर उस समय आये जब भारत देश में विदेशी आक्रांताओं के पैर जमने लगे थे। यहॉ की अकुत धन–संपदा के मोहवश देश को लुटते हुये जनमानस को नैराश्य की ओर पहॅुचा दिया था। सगुण साकार रुप की पूजा–पाठ से थककर जनता असहास हो गई थी,ऐसे कष्ट में डूबे जनता को तनिक मानसिक सबलता के सुख का आभास कराते निर्गुण निराकार ब्रम्ह की भक्तिमार्ग की ओर ले आया। कबीर उनके लिये तिनके का सहारा बनकर आये और समाज में बुराईयों, कुरीतियों, कर्मकांडो, बाहरी आडम्बरों, भेदभाव को दूर करने का स्तुत्य प्रयास किया। लोगों पर उनका गहरा प्रभाव हुआ। उनके पद,दोहे समाज को सुधारते हुये ढकोसलो से दूर कर्मशीलता की ओर प्रवृत्त करते रहे। कबीर को हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने वाणी का डिक्टेटर तो बच्चन सिंह जी ने रैडिकल सुधारक कहकर उपके समाजोपयोगी कार्यो को चिन्हित कर आम जन तक पहॅुचाया। ऐसा कोई भी व्यक्ति नही होगा,जो कबीर जी के कामों से प्रभावित होकर उसे बडे संत–महात्मा, समाज–सुधारक मानते हुये उसे नये समाज के लिये उपयोगी मानता हो। कबीरजी ने जितने

समाज के लिये कार्य किया है, उतने तो किसी संत कवियों ने मिलकर भी नही किया है। कबीर हिन्दू–मुस्लिम एकता, जाति प्रथा का खंडन, मूर्तिपूजा का विरोध, जीव हिंसा का विरोध, पाखण्ड का विरोध, कर्मकांड का विरोध, छुआछुत जैसी समाज के लिये घातक कुरीतियों के विरुद्व अकेले भीडे थे। कई लोगों ने इनका विरोध भी किया परंतु कबीर को नहीं रोक पाये।

कबीर वर्षो के बीत जाने के बाद आज भी प्रासंगिक है, उनकी शिक्षांये, सिद्धांत, समतामूलक समाज की अवधारणा, कर्म की महानता जन सामान्य में गहराई तक जडे जमाये हैं। छत्तीसगढ में देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा कबीर अंतस तह तक समाहित हो चुके है। कारण यह कि उपके प्रमुख शिष्यों में शामिल रहे धर्मदास जी की कर्मस्थली होना। धर्मदास जी ने कबीर के उपदेशो को जन–जन तक पहुॅचाने के लिये वह स्वयं और अपनी पत्नि सहित 56 करोड की संपत्ति कबीरपंथ की स्थापना और प्रचार–प्रसार के लिये लगाने में जरा भी संकोच नहीं किया। धर्मदास जी के कारण छत्तीसगढ का जन–जन कबीर जी से परिचित हुये है। कबीर ने अपने उपदेशो से उन लोकजनों को जगाने का कार्य किया है, जो शास्त्र सम्मत, लोकाचार, कर्मकांडों तथा आडम्बरों में जकडे हुये थे। "कबीर की जीवनी और रचनाओं में यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि उन्होंने भारत की समस्त बाह्य आवर्जना का अतिक्रमण करते हुए उसके अंतकरण की श्रेष्ठ सामग्री को ही सत्य साधक समझकर उपलब्ध किया था।.....लोकाचार,शास्त्रविधि और अभ्यास के रूध्दद्वार पर आघात करके उन्होंने भारत को जगाने का प्रयास किया है।"[1] कबीर जी ने अपनी बातों को कहने के लिये कभी–कभी कडा रूख भी अपनाने से परहेज नही किया है। समकालीन संत कवियों ने भले ही सरस,सरल प्रेमपूर्ण शैली में समाज को अपनी बात कही है वही कबीर जी ने समयानुकुल कडी फटकार के साथ गलत नीतियों के विरोध में कहे है, हालांकि उनके फटकार को भी लोंगो ने गुरू की डांट मानकर सहज ही स्वीकार किये हैं। "सामाजिक समता की सिद्धि के लिये कबीर को डांट–फटकार का सहारा लेना पडा। किन्तु रामानुज,रामानंद और वल्लभाचार्य तथा चैतन्य ने उसी समता का उपदेश प्रेम से गदगद होकर दिया है।"[2]

उद्देश्य :

साहित्य, सॉस्कृतिक या किसी साहित्यकार, समाज सुधारक से संबंधित अध्ययन शोध कार्य की दृष्टि से एक विशेष स्थान रखता है। संप्रति इस विषय से संबंधित शोध कार्य करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। इस शोध–पत्र में छत्तीसगढ़ में धर्म, संस्कृति, दर्शन, लोककला, जीवनशैली में कबीर के प्रभाव का अध्ययन को सरल, सहल रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

शोध–प्रविधि :

प्रस्तुत शोध–पत्र में व्याख्यानात्मक और विश्लेषणात्मक शोध प्रविधियो को लिया गया है। इस कार्य में प्रत्यक्ष रूप से देखे गए अनुभव के साथ विभिन्न महान व्यक्तियों की विचारों को लिया गया है।

धर्म :

छत्तीसगढ में कबीर का प्रभाव का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है। यहॉ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी सहित विभिन्न संप्रदायों को मानने वाले लोगों का निवास है। कबीर जी के दोहे, भजन, पद छत्तीसगढ के लोगों को 8–10 की संख्या में आज भी मुंहजबानी याद है, जिनका उपयोग वे अपने नीचे की पीढियों को नीतिगत शिक्षा देने, छोटों के साथ बातचीत के समय, सामाजिक बैठको और सम्मेलनों में अवश्य करते हैं। कबीर जी के दोहे जनमानस में इतने रचे–बसे हैं कि वह युगों तक लोगों को मानवता का पाठ पढाते हुये कर्म की कुशलता का प्रचार करते रहेंगें।

छत्तीसगढ में कबीरपंथ को मानने वालों में सबसे ज्यादा साहू समाज प्रभावित रहे है। साहू समाज में दो धारा प्रमुख है– कबीरपंथी और साक्तपंथी। कबीर के विचारों को मानने वाले कबीरपंथी हुये जिसे कबीराहा भी कहते है। दूसरे साक्त मत वाले है

जो अपने घरों में विभिन्न देवी–देवताओं को मानते है जिसे सकताहा कहा जाता है। पश्चात पनिका समाज वर्ग के लोग आते हैं, जो अपना सरनेम मानिकपुरी लिखते है। इन पर भी कबीर जी का बहुत ही गहरे प्रभाव है। कबीरपंथी लोग मद्यपान,मॉससेवन से दूर होते है,जो आचार्य या महंत जी से दीक्षित कंठी माला और तिलक धारण किये होते है। घर में विभिन्न अवसरों पर कार्यक्रमों में चौका–आरती का कार्यक्रम अवश्य कराते हैं, जिसमें कबीर जी के भजनों,दोहों को गाकर लोगों को जागृत करते हुये लोगों तक कबीर के विचारों को जन–जन तक पहुँचाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में चौका–आरती के कार्यक्रमों में गॉव भर के लोग आमंत्रित होकर उपस्थित होते हैं। ये कबीर जी के ही प्रभाव है जो उनके कार्यक्रमों में भीड जुटी रहती है। अन्य समाजों मुस्लिम, यादव, कंवर, महार, कुर्मी, मरार, सतनामी के लोग भी कबीर से प्रभावित रहे है। इनके घरों में कबीर जी की फोटों प्रायः दिखाई देती है।

संस्कृति :

भारत देश के हृदय स्थल में छत्तीसगढ प्रांत के अवस्थित होने के कारण सभी संस्कृतियों को अपने में सम्मिलित किये हुये है। ये कबीर जी की लोगों में स्वीकार्यता का ही प्रभाव है कि छत्तीसगढ के अनेक स्थलों पर कबीर मठ और धार्मिक स्थल के रूप में चिन्हाकिंत है। जिनके कारण लोगों के मानस में कबीर समाये हुये है। छत्तीसगढ में कबीरपंथियों के सबसे पवित्र धार्मिक स्थलों में रायपुर–बिलासपुर मार्ग में स्थित दामाखेडा आस्था का सबसे बडा केन्द्र है। कबीरपंथ के 12वें वंशगुरू गुरू उग्रनाम साहेब के द्वारा सन् 1903 में दशहरा के दिन स्थापित किया गया, तब से तीर्थ स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। तथा यहॉं कबीर कुटिया और भवन का निर्माण समाधि स्थल के पास ही बने है, जिन पर दोहे, चौपाई विशेष कलात्मक रूप से अंकित है। आत्मा–परमात्मा,जीव–जगत पर संत कबीर और धर्मदास के बीच हुये गुरू–शिष्य की शिष्यत्व भाव के सवालों का गुरूत्व भाव से दिये जवाबों को धर्मदास–संवाद के रूप में रखें हुये है। कबीरपंथियों का राज्य में दूसरा बडा तीर्थ के रूप में साजा विकासखंड के मुसवाडीह गॉव का स्थान है। संत मनिहार दीवान की समाधि के कारण यह प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को यहॉं के लगभग 8 एकड में विस्तारित स्थल में भव्य मेले के समागम में देश–विदेश के कबीरपंथी पहुँचकर अपनी आस्था प्रकट करते हैं। कबीर जी ने मुक्तामणि नाम साहब को 42 पीढियों तक अपने पंथ का प्रचार–प्रसार करने का आशीर्वाद दिया था। इस कारण मुक्तामणि नाम साहब हमारे छत्तीसगढ के प्रथम वंशगुरू हुये और अपना कार्य क्षेत्र कोरबा जिले के छोटे से गॉव कुदुरमाल को बनाया। दामाखेडा और कुदुरमाल में माघ पूर्णिमा को प्रतिवर्ष विशाल मेले का आयोजन होता है। जिसमें देश–विदेश से कबीर के अनुयायी पहुँचकर अपनी श्रद्धा भावना का प्रकटीकरण कर सॉस्कृतिक सौहार्द्र का परिचय देते है। कवर्धा शहर जो कालांतर में कबीरधाम कबीर आगमन के रूप में मिले संज्ञा का परिचायक है, यहॉं धर्मदास के वंशजों के गद्दी स्थापित होने के कारण प्रसिद्ध है। राजनॉदगॉव जिले के खुज्जी के समीप नादिया मठ कबीर तीर्थ स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। 5, 6, 7 मार्च 2020 को हुये 196 वॉं अखिल भारतीय कबीर संत सम्मेलन चौका आरती सात्विक महायज्ञ जिसमें विशाल जनसमूह के लिये भंडारे की व्यवस्था होना इस बात का प्रमाण है कि कबीर लोगों के मन–मस्तिष्क में सॉस्कृतिक रूप से समाहित है। नादिया के कबीर मठ में प्रतिवर्ष फाल्गुन महोत्सव के रूप में 2–3 दिनों का संत–समागम, प्रवचन का कार्यक्रम भव्य रूप में होता है। जिनका समापन होलिकादहन के दिन होता है। छत्तीसगढ में कबीर जी के अनेक धार्मिक स्थल, मठ, आश्रम बने हुये हैं जहॉं से जुडे सेवाभावी लोग सॉस्कृतिक पक्ष को सबल करते हुये योग कार्यक्रम, वृक्षारोपण, साफ–सफाई जैसे कार्य करते रहते हैं।

दर्शन :

कबीर के दार्शनिक विचारों का प्रभाव से छत्तीसगढ के लोग अछुते नहीं रहे। शिक्षित और सभ्य समाज के लोगों ने कबीर जी के विचारों को आत्मसात किया है। वर्तमान की पीढियों पर तो उनका ज्यादा ही असर हुआ है। कबीर जी के समता की भावना, कर्मकांडो का त्याग, आडम्बर विरोध, हिन्दू–मुस्लिम एकता पर जोर, मूर्तिपूजा विरोध, भेदभाव का विरोध, एकेश्वरवाद का समर्थन,

बहुदेववाद का विरोध,माया का त्याग, गुरू की भक्ति जैसे विचारों को पूरे मन से अपनाते हुये दिखाई दे रहे है। छत्तीसगढ का एक बडा वर्ग इन विचारों का पोषक है। एक पढे–लिखें सभ्य व्यक्ति अब कहॉ इन झमेलों में पडना चाहता है। वह सभी लोगों को समान निगाहों से देखता है। अधिक कर्मकांड और दिखावा से दूर सामाजिक एकता पर जोर देते हुये छुआछुत जैसे विसंगति को नहीं मानता। बहुदेववाद को न कहते हुये एक ही ब्रह्म को मानने का समर्थक है।

कबीर जी के दर्शन संबंधी विचारों से एक नये युग का निर्माण हो सकता है। अपने विचारो से समाज में जकडे बुराईयों को दूर करने का सबसे ज्यादा जतन कबीर ने ही किया है। ब्रह्म संबंधी विचारों में उन्होंने स्पष्ट किया है कि उनके राम अन्यों के राम से अलग है। सब के राम साकार रूप दशरथ पुत्र मर्यादा पुरूषोत्तम राम थे,परंतु कबीर जी ने निर्गुण निराकार राम को अपना इष्ट माना। भले ही राम नाम का मंत्र उन्होंने अपने गुरू रामानंद जी से लिया परंतु कालातंर में दोनों के राम अलग हो गये। "कबीर ने दूर–दूर तक देशाटन किया,हठयोंगियों तथा सूफी मुसलमान फकीरों का भी सत्संग किया। अतः उनकी प्रवृत्ति निर्गुण उपासना की ओर दृढ हुई। अद्वैतवाद के स्थूल रूप का कुछ परिज्ञान उन्हें रामानंद जी के सत्संग से पहले ही था। फल यह हुआ कि कबीर के राम धनुर्धर साकार राम नहीं रह गये,वे ब्रह्म के पर्याय हुये–"[3]

दसरथ सुत तिहुं लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना।।

कबीर जी को पूर्णतया जानने के लिये उनके सभी उपदेशों को आत्मसात करते हुये जीवन में उतारने का नेक काज किया जाना मानवोचित होगा। उनकी वाणियों का संग्रह बीजक सबके लिये पठनीय है। जिसमें सभी कही बातों का समावेश है। "कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है,जिसके तीन भाग किये गये है–रमैनी, सबद और साखी। इसमें वेदांततत्व, हिन्दू–मुसलमानों को फटकार, संसार की अनित्यता, हृदय की शुद्धि, प्रेमसाधना की कठिनता, माया की प्रबलता, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन आदि की असारता, हज, नमाज, व्रत, आराधना की गौणता इत्यादि अनेक प्रसंग है।"[4] कबीर जी ने कर्म को बडा माना है, ये सिर्फ के लिये नहीं कहा। उन्होंने करके दिखाया है। अपनी जीविका के लिये दूसरे साधु–संतों की तरह वे भाररूप कभी नहीं रहे। वे खुद अपने हाथों से परिश्रम कर अपना पेट पालने मे लगे रहते थे। तथा अपनी कमाई का कुछ अंश जरूरतमंदों की आवश्यकताओं के लिये भी दे देते थे। "धन–संपत्ति जोडना वे उचित नहीं समझते थे। थोडे ही में संतोष करने का उन्होंने उपदेश दिया है। जो कुछ वे दिन भर मे कमाते थे,उनका कुछ अंश अवश्य साधु–संतों की सेवा में लगाते थे और कभी–कभी सब कुछ उनकी सेवा में अर्पित कर डालते और आप निराहार रह जाते थे।"[5]

'काहे कूँ भीत बनाऊँ टाटी, का जाणूँ कहँ परिहै माटी।
काहे कूँ मंदिर महल चिनाऊँ, मूवॉ पीछै घडी एक रहन न पाऊँ।'

इसी तरह कबीर जी ने ज्ञान के महत्व पर भी अच्छी बात कही है कि हमें ज्ञान कहीं से भी मिल जाये उसे ग्रहण करना चाहिये। "किसी साधु से उनकी जाति न पूछो बल्कि उससे ज्ञान की बात पूछो। इसी तरह तलवार की कीमत पूछो म्यान को पडा रहने दो।"[6]

'जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पडा रहन दो म्यान।।'

कबीर जी ने समाज की कुरीति छोटे–बडे, ऊँच–नीच, जाति–पॉति का भी खुलकर विरोध किया। स्वर्णों की ऊँचे होने की मानसिकता को अच्छे कर्मो से बडा बनने की बात कहकर चित कर दिया। कबीर का ब्राम्हण सदाचारो के कर्म से तय होता है, जन्म के आधार से बने ब्राम्हण स्वीकार नहीं है। "उनका काल सामाजिक शोषण व अन्याय का था। ब्राम्हण वर्ग अपनी नैतिकता को

त्यागकर भी श्रेष्ठ बना हुआ था। वह जन्म के आधार पर श्रेष्ठता या निम्नता के हामी नहीं थे,बल्कि कर्म के सिद्धांतों के समर्थक थे।"[7]

इस प्रकार कबीर जी ने समाज को सुधारने का प्रयास किया है,इन सब प्रयासों का जनमानस के मानस पटल पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उनके दार्शनिक विचारों से छत्तीसगढ का समाज सदैव आलोकित रहा है।

लोककला :

छत्तीसगढ के लोककला में कबीर जी का प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है। छत्तीसगढी नाच पार्टी मटेवा के प्रमुख कलाकार रहे झुमुकदास बघेल और न्याईक दास मानिकपुरी जी के द्वारा हर मंचस्थ कार्यक्रम में कबीर जी के दोहो को गा–गाकर विशाल जनसमूह को सुनाना हमारे संस्कृति और लोककला में गहरे तक बसे होने का बोध कराता है। इनके साथ ही अन्य सॉस्कृतिक संस्थाओं के चरित्र अभिनेताओं द्वारा भी कबीर के दोहे को सीख के रूप में कहना, गायकों द्वारा कबीर के भजनों को गाना तथा विशेष रूप से सूफी शैली में गाना लोककला में कबीर के अधिक करीब होने का प्रमाण है। ग्रामीण अंचलों में दीपावली त्यौहार, मेला–मंडई पर्व में पारंपरिक वाद्ययंत्रों के सुमधुर धुन में राउत नृत्य के राउत नर्तक दलों द्वारा गाते–बजाते हुये बीच–बीच में कबीर जी के दोहो को विशेष लय में कहना आनंददायक होता है। इसी तरह गांव की शादियों में तेल–हल्दी के समय गंडवा बाजा की धुन और दोहों पर थिरकना दर्शनीय है। ग्रामीण अंचलों में गणेश, सरस्वती, लक्ष्मी जी की स्थापना के अवसरों पर होने वाले भजनो के प्रमुख ंअंतरों में तथा नीतिपरक व प्रेरणा गीतों में कबीर के दोहे और भजन निश्चित रूप से सम्मिलित रहते हैं। इस तरह से छत्तीसगढ के लोककला में कबीर का प्रभाव परिलक्षित होते है।

जीवनशैली :

कबीर छत्तीसगढ के जन–जन के हृदयतल में विराजित है। कबीर के सद्‌विचार, सदाचार, सरल और सहज ढंग से कही खरी–खरी बातें, उलटबांसी शैली लोंगों के व्यवहारिक पक्ष को अनेक सीख देता है। कबीरपंथी लोंगों में कबीर जी के प्रभाव उनके जीवनशैली में व्यवहारिक रूप लिये हुये है। प्रायः अपने घरों में जन्म लेने वाले बच्चों जिसमें लडकों के नाम के पीछे दास जरूर लिखते है। जैसे–रामदास, मानदास, जनकदास, राहूलदास, फूलदास आदि। अधिकतर लोग सफेद धोती–कुर्ता के साथ कंठी माला और तिलक धारण करते हैं। घरों मे ंहोने वाले बडें कार्यक्रमों शादी, नामकरण, मृत्यु संस्कार, भंडारा आदि में भोजन करने के पहले कबीर जी की स्तुति के साथ 3 या 5 बार साहेब बंदगी साहेब कहकर ही लोग भोजन ग्रहण करते है। यह सामान्य लोक व्यवहार लोगों ने अपने जीवन में शामिल कर लिया है। कबीरपंथी लोग आपस में मिलने पर अभिवादन स्वरूप साहेब बंदगी साहेब कहकर ही अपनी बात की शुरूआत करते है। सबसे अच्छी बात तो हमारे छत्तीसगढ में है कि दूसरे संप्रदाय के लोग भी कबीरपंथियों को मिलने पर अभिवादन मे साहब बंदगी साहब कहना नहीं भूलते है। इसी तरह अलग–अलग मत को मानने वाले लोग भी ंआपसी मेलजोल में अभिवादन के रूप में एक–दूसरे के अभिवादन को कहकर सम्मान व्यक्त करते है। एक दूसरे के जीवनशैली मे बसे भाव को आदर और सम्मान करना छत्तीसगढ के लोगों के जीवन व्यवहार का अभिन्न भाग है।

निष्कर्ष :

यह तो सर्वमान्य है कि कबीर जी और उनके सिद्धांतो को छत्तीसगढ. में सबसे ज्यादा प्रचारित कर जन–जन तक पहॅुचाने का वंदनीय कार्य उनके प्रमुख शिष्यों में रहे धर्मदास जी ने किया है। सबसे ज्यादा शाखा और कबीरपंथियों की संख्या भी हमारे छत्तीसगढ के लोगों की है जिन्होंने कबीर जी को करीब से जानने का प्रयास किया और उनके ही विचारो को आत्मार्पित कर जीवन शैली का अभिन्न अंग भी बना लिया है। छत्तीसगढ में कबीर सिर्फ संप्रदायों तक सीमित नहीं रहे अपितु वे सर्व समाजों के प्रिय संत बन गये है। उनके कार्यक्रमों में जुटने वाली भीड इस बात का सूचक है कि कबीर सबके है। उन्होंने उन वर्जनाओं को

तोडा है जिनके कारण पहले के समाजों ने अपने से छोटे कहे जाने वाले लोगों का जमकर शोषण किया और उन्हें नारकीय जीवन जीने के लिये बाध्य किया था। समाज की उन बुराईयों के विरुद्ध में अकेले खडे होकर शोषकों को ललकारा है। समाज को विभाजित करने वालों को भी कडी फटकार लगाई तथा हिन्दू–मुस्लिम के आडम्बरों को आडे हाथों लेकर निंदा करते हुये उसमें एकता,भाईचारे की भावना का भी प्रस्फुटन कराया। "सदगुरू कबीरदास जी दोनों ही संप्रदाय को अपने कटु वचनों से अवगत कराते रहे,इससे उनके आलोचकों की संख्या भी बहुत ज्यादा हो गयी थी। लेकिन उनके मुख से निकले एक–एक शब्द ने समाज को एक नयी दिव्य दृष्टि प्रदान की। उन्होंने जो भी देखा, सुना, समझा उसे ही आग्रह, दुराग्रह और पूर्वाग्रह एवं परिपाटी के लीक का मोह त्यागकर, मनुष्यों के कल्याणार्थ निर्भीक भाव से उसे समाज के सामने प्रस्तुत किया। साथ ही उन्होंने समाज के सामने लोकवादी एवं कल्याणकारी विचारधारा का प्रादुर्भाव भी किया।"[8]

कबीर जी ही एक ऐसे संत कवि हुये जिनकी शिक्षाओ, उपदेशों, सिद्धांतों का सर्वाधिक रूप में समाज को एक नयी दिशा देने का काम होता है। कबीर की सधुक्कडी भाषा में कही बातों को लोगों ने पूर्ण आदर के साथ अपने मानस में स्वीकार्यता दी है। देश भर के अनेक स्थानों मे घूमते रहने के कारण उनके उपदेशों में हमें पंजाबी, हरियाणवी, राजस्थानी, खडी बोली, ब्रज, अरबी, फारसी का मधुर पुट मन को आनंदित करता है। कबीर पढे–लिखे तो नही थे। छन्द, अलंकार की विशेष जानकारी नहीं होने पर भी काव्यों में इनका समावेश खुद ही हो गया है, जो पाठक को आनंद देने के लिये पर्याप्त है। उन्होने अपनी बातें अनुभव और साधु–संतों की संगति के कारण कही है। निःसंदेह कबीर का स्थान उनके समाज–सुधारक उपदेशों के कारण शिखर पर है। जन सामान्य में तुलसीदास के बाद निश्चित ही कबीर ही अपने धर्मोपदेशक संत कवि के रूप में प्रभाव जन–जन तक स्वीकार्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1.नामवर सिंह; दूसरी परंपरा की खोज (1)

2.रामधारीसिंह दिनकर; संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ कं 339

3.रामचंद्र शुक्ल; हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ कं 63–64

4.रामचंद्र शुक्ल; हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ कं 66

5.पं.श्यामसुंदरदास; कबीर ग्रंथावली, प्रस्तावना पृष्ठ कं 25

6.गोविंद सिंह; कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ कं 8

7.अभय एम.ए.हिन्दी (प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)पृष्ठ कं 33

8.मनोज लाम्बा; सद्गुरू कबीर बीजक, पुस्तक के बारे में.....